Baglamukhi Chalisa – मां बगलामुखी चालीसा

॥ दोहा ॥

सिर नवाइ बगलामुखी, लिखूं चालीसा आज,
कृपा करहु मोपर सदा, पूरन हो मम काज॥

www.shivaarti.com

॥ चौपाई ॥

जय जय जय श्री बगला माता |
आदिशक्ति सब जग की त्राता ॥ १ ॥

बगला सम तब आनन माता |
एहि ते भयउ नाम विख्याता ॥ २ ॥

www.shivaarti.com

शशि ललाट कुण्डल छवि न्यारी |
असतुति करहिं देव नर-नारी ॥ ३ ॥

पीतवसन तन पर तव राजै |
हाथहिं मुद्गर गदा विराजै ॥ ४ ॥

तीन नयन गल चम्पक माला |
अमित तेज प्रकटत है भाला ॥ ५ ॥

www.shivaarti.com

रत्न-जटित सिंहासन सोहै |
शोभा निरखि सकल जन मोहै ॥ ६ ॥

आसन पीतवर्ण महारानी |
भक्तन की तुम हो वरदानी ॥ ७ ॥

पीताभूषण पीतहिं चन्दन |
सुर नर नाग करत सब वन्दन ॥ ८ ॥

www.shivaarti.com

एहि विधि ध्यान हृदय में राखै |
वेद पुराण संत अस भाखै ॥ ९ ॥

अब पूजा विधि करौं प्रकाशा |
जाके किये होत दुख-नाशा ॥ १० ॥

प्रथमहिं पीत ध्वजा फहरावै |
पीतवसन देवी पहिरावै ॥ ११ ॥

www.shivaarti.com

कुंकुम अक्षत मोदक बेसन |
अबिर गुलाल सुपारी चन्दन ॥ १२ ॥

माल्य हरिद्रा अरु फल पाना |
सबहिं चढ़इ धरै उर ध्याना ॥ १३ ॥

www.shivaarti.com

धूप दीप कर्पूर की बाती |
प्रेम-सहित तब करै आरती ॥ १४ ॥

अस्तुति करै हाथ दोउ जोरे |
पुरवहु मातु मनोरथ मोरे ॥ १५ ॥

मातु भगति तब सब सुख खानी |
करहुं कृपा मोपर जनजानी ॥ १६ ॥

www.shivaarti.com

त्रिविध ताप सब दुख नशावहु |
तिमिर मिटाकर ज्ञान बढ़ावहु ॥ १७ ॥

बार-बार मैं बिनवहुं तोहीं |
अविरल भगति ज्ञान दो मोहीं ॥ १८ ॥

पूजनांत में हवन करावै |
सा नर मनवांछित फल पावै ॥ १९ ॥

www.shivaarti.com

सर्षप होम करै जो कोई |
ताके वश सचराचर होई ॥ २० ॥

तिल तण्डुल संग क्षीर मिरावै |
भक्ति प्रेम से हवन करावै ॥ २१ ॥

दुख दरिद्र व्यापै नहिं सोई |
निश्चय सुख-सम्पत्ति सब होई ॥ २२ ॥

फूल अशोक हवन जो करई |
ताके गृह सुख-सम्पत्ति भरई ॥ २३ ॥

फल सेमर का होम करीजै |
निश्चय वाको रिपु सब छीजै ॥ २४ ॥

www.shivaarti.com

गुग्गुल घृत होमै जो कोई |
तेहि के वश में राजा होई ॥ २५ ॥

गुग्गुल तिल संग होम करावै |
ताको सकल बंध कट जावै ॥ २६ ॥

बीलाक्षर का पाठ जो करहीं |
बीज मंत्र तुम्हरो उच्चरहीं ॥ २७ ॥

एक मास निशि जो कर जापा |
तेहि कर मिटत सकल संतापा ॥ २८ ॥

घर की शुद्ध भूमि जहं होई |
साध्का जाप करै तहं सोई ॥ २९ ॥

www.shivaarti.com

सोइ इच्छित फल निश्चय पावै |
यामै नहिं कदु संशय लावै ॥ ३० ॥

अथवा तीर नदी के जाई |
साधक जाप करै मन लाई ॥ ३१ ॥

दस सहस्र जप करै जो कोई |
सक काज तेहि कर सिधि होई ॥ ३२ ॥

www.shivaarti.com

जाप करै जो लक्षहिं बारा |
ताकर होय सुयश विस्तारा ॥ ३३ ॥

जो तव नाम जपै मन लाई |
अल्पकाल महं रिपुहिं नसाई ॥ ३४ ॥

सप्तरात्रि जो पापहिं नामा |
वाको पूरन हो सब कामा ॥ ३५ ॥

नव दिन जाप करे जो कोई |
व्याधि रहित ताकर तन होई ॥ ३६ ॥

www.shivaarti.com

ध्यान करै जो बन्ध्या नारी |
पावै पुत्रादिक फल चारी ॥ ३७ ॥

प्रातः सायं अरु मध्याना |
धरे ध्यान होवै कल्याना ॥ ३८ ॥

कहं लगि महिमा कहौं तिहारी |
नाम सदा शुभ मंगलकारी ॥ ३९ ॥

पाठ करै जो नित्या चालीसा ॥
तेहि पर कृपा करहिं गौरीशा ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

www.shivaarti.com

सन्तशरण को तनय हूं, कुलपति मिश्र सुनाम |
हरिद्वार मण्डल बसूं, धाम हरिपुर ग्राम॥

उन्नीस सौ पिचानबे सन् की, श्रावण शुक्ला मास |
चालीसा रचना कियौ, तव चरणन को दास ॥